Vol 5 Issue 1 Feb 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-5 | Issue-1 | Feb-2015
Available online at www.isrj.org

भारतीय संगीत का अभ्यास विधि

बीजु कुमार भागवती

M.Mus, Sangit Nipun, UGC NET, PhD (Music), Senior Music Teacher, Study Hall Educational Foundation, Gomti Nagar,Lucknow, Uttar Pradesh.

सारांश :– संगीत में अभ्यास विधि का बहुत बड़ा महत्व है। संगीत में ही नहीं अपितु प्रत्येक कला की सिद्धि के लिए अभ्यास की आवश्यकता पड़ती ही है। समय समय पर गुणिजनों ने अभ्यास की विभिन्न विधियाँ बताई है। संगीत का अभ्यास उचित एवं सटीक अवस्था में किया जाए, तभी गायक–वादक उच्चकोठि के संगीतज्ञ बन सकते हैं। उत्तम गुरु के समीप रहकर, एकाग्रचित्त होकर शांत एवं सुस्थिर वातावरण में आसीन होकर अभ्यास करने से कलाकार को उचित फल की प्राप्ति हो सकती है। संगीत के अभ्यास के लिए शिष्य में अध्ययन एवं अनुशीलन की तत्परता होनी चाहिए। निरन्तर साधना मात्र से ही स्वर, लय एवं ताल पर एकाधिकार प्राप्त होता है, जिससे संगीतज्ञ सफल कलाकार की कोटि में प्रतिष्ठित हो सकता है।

शब्द कुंजी: संगीत, अभ्यास, अभ्यास विधि, रियाज, साधना,`ापससए ब्रह्मचर्य, अनुशासन, स्वर, आलाप, तान, लय, ताल, भाव, रस।

प्रस्तावना :–

कोलाहल एवं समस्याओं से घनीभूत संसार में यदि परमात्मा का कोई उत्तम वरदान मनुष्य को प्राप्त हुआ है तो वह संगीत ही है । पीड़ित हृदय को संगीत से शान्ति एवं संतोष मिलता है। संगीत से मनुष्य को आत्मिक प्रफुल्लता की प्राप्ति की साथ साथ उनके सृजन–शक्ति का भी विकास होता है।

शास्त्रकार का कहना है, ''स्वरेण सल्लयेत यागी'' – ''स्वर साधना द्वारा योगी अपने को तल्लीन करते हैं''। मन की शक्ति को एकाग्र कर विद्याध्ययन से लेकर किसी भी व्यवसाय में नियोजित कर चमत्कारिक सफलतायें प्राप्त की जा सकती हैं। संगीत एक प्रकार का योग साधना है जिसमें ध्वनि–कम्पन नाभि प्रदेश से निकाल कर ब्रह्म रन्ध्र में लाये जाते है, इसके पश्चात यहाँ ताल में उन्हें पकड़कर मनोमय विद्युत का प्रयोग किया जाता है। तब वह मुख द्वारा बाहर निकलता है। यह प्रयोग इच्छानुसार तभी किसी भी प्रयोजन में हो सकता है, जब संगीत का अभ्यास उचित एवं सटीक अवस्था में किया जाए।

भारतीय संगीत का अभ्यास विधि

संगीत में अभ्यास विधि का बहुत बड़ा महत्व है। संगीत में ही नहीं अपितु प्रत्येक कला की सिद्धि के लिए अभ्यास की आवश्यकता पड़ती ही है, जिसे हम अपनी सांगीतिक भाषा में 'रियाज' कहते हे। रियाज एक उर्दू शब्द है, जिसका अर्थ ही है, संगीत का अभ्यास। अभ्यास के लिए उद्दिष्ट वस्तु के सिद्धान्तों का ज्ञान आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अभ्यास किस प्रकार करना चाहिए इसका ज्ञान होना भी अत्यन्त आवश्यक है। किन–किन स्थितियों में अभ्यास सम्भव होता है तथा किन–किन विधियों से अभ्यास सुगम और साध्य हो जाता है आदि बातों पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है।

संगीत एक कला के साथ–साथ`ापसस भी है। Skill का तात्पर्य पेशीय दक्षता एवं क्रियाकलाप है। एक गुरु अथवा शिक्षक को चाहिए कि उनकी शिक्षण पद्वति क्रमानुसार हो – पहले चरण में उन्हें विद्यार्थी को विषय की`ापसस का व्यवहारिक ज्ञान देना व उसका विश्लेषण करना चाहिए, दुसरे चरण में विद्यार्थी की पूर्व ज्ञान का परीक्षा लेना, जैसे, विद्यार्थी में लय, ताल, वजन को समझने की क्षमता कितनी है, आदि; तीसरे चरण में गुरु स्वयं प्रदर्शन करेगा, चौथे चरण में विद्यार्थियों से शिक्षण अभ्यास करवायेगा, पाँचवे चरण में विद्यार्थियों से अलग अलग सिखाए हुए राग विस्तार से सुनेगा – तत्पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी की प्रतिभा का मूल्यांकन कर उसी अनुरूप शिक्षण पद्वति को अपनायेगा।

भारतीय संस्कृति के इस विकासोन्मुख युग में संगीत कला का क्षेत्र उतरोत्तर व्यापक एवं विस्तृत होता चला जा रहा है। क्रियात्मक संगीत की प्रधानता के साथ–साथ कलाकारों की अभिरूचि उसके सिद्धान्तों और आदर्शो के अनुशीलन की ओर उन्मुख हो रही है। संगीत शब्द तथा उसके अनुशीलन अथवा अभ्यास शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। गुणिजनों ने संगीत अभ्यास की विभिन्न विधियाँ बतायी हैं। वे सर्वप्रथम संगीत अभ्यास के लिए सुस्थिर आसन तथा स्वच्छन्द वातावरण की कल्पना की है। संगीत में स्वर, लय एवं ताल की एकरूपता के लिए एकाग्र चित्त की आवश्यकता होती है। एकान्त स्थान तथा शान्त वातावरण के अभाव में चित्त में एकाग्रता सम्भव नहीं हो पाती। अभ्यास के समय प्रत्येक स्वर से निःसृत ध्वनियों का ध्यान करने से अभ्यासकर्ता की आत्मा पर उसका संस्कार पड़ता है। तभी उन्हें उन ध्वनियों की ऊँचाई–निचाई का पूर्णतः ज्ञान प्राप्त हो जाता है। शुद्ध–विकृत स्वर, ताल लय आदि का भी एकीकरण तभी हो सकता है जब साधक एकान्त वातावरण में तथा सुस्थिर आसन पर बैठकर अभ्यास करें ।

संगीत अभ्यास में ब्रह्मचर्य पालन को भी महत्व दिया जाता है। ब्रह्मचर्य पालन में इन्द्रियों पर अधिकार तथा आहार–बिहार का संयम अत्यन्त आवश्यक है। साधक द्वारा स्वरों के शुद्धोच्चारण में आन्तरिक ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है जिसका विकास ब्रह्मचर्य पालन पर अवलम्बित है। संगीत के अभ्यास के लिए सुयोग्य गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु का विद्वान होने के साथ–साथ उनके पास प्रकाशन शक्ति का होना भी आवश्यक है। सभी उच्चकोटि के गायक–वादक उच्चकोटि के शिक्षक नहीं हो पाते। कई गुरु साधारण गायक होते है, परन्तु उन्हें शिक्षण कला में नैसर्गिक क्षमता प्राप्त होता है। ऐसे गुरु उत्तमकोटि के माने जाते हैं, जो उच्चकोटि के गायक होने के साथ–साथ उच्चकोटि के शिक्षक भी होते हैं। छात्रों को चाहिए की वे ऐसे ही गुरुओं से संगीत की शिक्षा प्राप्त करें। ऐसे गुरु, शिष्यों की सफलता में ही स्वयं की सफलता समझते हैं। संगीत के अभ्यास के लिए यह आवश्यक है कि प्रारम्भ मे जब तक स्वर–सिद्धि प्राप्त न हुई हो तब तक गुरु के समक्ष ही स्वर–साधना करनी चाहिए। प्रत्येक स्वर का सौन्दर्य स्वर–साधना के द्वारा गुरु–मुख से निखर कर प्राप्त होता है। भारतीय संगीत के सभी रागों का अपना ही एक सुन्दरता हैं । रागों का सौंदर्य निर्भर करता है विभिन्न प्रकार के स्वर लगाने की विधि पर। रागों की तरह प्रत्येक स्वर का भी अपना एक सौन्दर्य होता है : आवश्यकता है उसे निखार कर बाहर लाने की। किसी राग को प्रस्तुत करने से पहले गायक अथवा वादक के मन में राग–सौन्दर्य का एक सुक्ष्म रूप होता है। उसी को वह नादात्मक रूप में अथवा लयात्मक रूप में व्यक्त करता है, जिसके लिए उनका उत्तम गुरु का सामीप्य प्राप्त होना अत्यन्त आवश्यक है ।

अध्ययन तथा अनुशीलन – यह दोनों ही संगीत में अत्यन्त आवश्यक है। संगीत के अभ्यास के लिए शिष्य में अध्ययन एवं अनुशीलन की व्यापक तत्परता होनी चाहिए। किसी भी कारणवशः अभ्यास में अन्तर या विक्षेप उत्पन्न करना हानिकारक होता है। निरन्तर साधना मात्र से ही स्वर, लय एवं ताल पर एकाधिकार प्राप्त होता है। इसलिए अभ्यास का समय थोड़ा ही क्युँ न हो, वह निरन्तर होनी चाहिए। संगीत का अभ्यास करने वाले प्रत्येक छात्र में अपने गुरु के प्रति श्रद्धा का भाव रहना ही चाहिए तथा उनके भीतर संगीत के प्रति अभिरूचि होनी चाहिए । इन उपकरणों से शिष्य सरलता और सुक्षमतापूर्वक संगीत की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं ।

प्राचीन काल में गुरु द्वारा दी जानेवाली संगीत शिक्षा एक विशेष शैली की होती थी। शिष्य को उसी शैली के अनुसार अभ्यास कराया जाता था। इस कारण शिष्य के कला में एक विशेष प्रकार के शैली का निखार आ जाता था। उस समय के संगीत शिक्षा अनुशासनात्मक होने के कारण गुरु के निर्देशानुसार शिष्य को एक ही प्रकार को बार बार एवं अधिक से अधिक समय तक दोहराते रहना पड़ता था। इस प्रकार शिष्य को उचित रीति की सर्वोत्तम एवं पूर्ण शिक्षा प्राप्त होती थी और अनुशासन में रहने का गुण उसके जीवन का अंग बन जाता था। स्पष्टतः ही यही गुण एक कलाकार के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

संगीत शिक्षा का तात्पर्य संगीत के साधना पक्ष से जुड़े है। हमारे यहाँ संगीत को 'साधना' एवं संगीत की चर्चा करनेवाले व्यक्ति को 'साधक' माना जाता है। संभवतः इसी कारण संगीत व्यक्ति के नैतिक विकास का साधन बनता है। संगीत शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में साधना शक्ति व संचय विकसित होताा है।

वर्तमान संगीत में तान एवं आलाप का अर्थ सामान्य लोग भी जानते हैं– और वह यह, कि गाते अथवा बजाते समय बहुत कुछ स्वरगम द्वारा अथवा आ–कार द्वारा प्रस्तुत करना तान एवं आलाप कहलाता है, जो बहुत तथा निरंतर अभ्यास के पश्चात ही गला अथवा हाथ पर बैठ सकता है। इस कार्य के साधन हेतु गायक अथवा वादक द्वारा अंलकारों का अभ्यास करना लाभदायक होता हे। अलंकारों के अभ्यास से स्वरों पर अधिकार प्राप्त होता है और गले या हाथ की तैयारी बढ़ जाती हे। स्वरों के अतिरिक्त संगीत के अभ्यास के लिए लय और ताल की साधना भी अत्यंत आवश्यक है। संगीत अभ्यास में स्वर, लय व ताल का अलग–अलग अभ्यास करना चाहिए। रागों के अभ्यास के समय अभीष्ट राग के आरोह– अवरोह व पकड़ के स्वरों का पूर्ण अभ्यास करने के पश्चात ही आलाप एवं तान का अभ्यास करना फलदायक सिद्व होता है। भिन्न–भिन्न प्रकार के तान–आलाप का अभ्यास क्रमशः एक–एक क्रम पर ध्यान रखकर करना चाहिए। प्रथमावस्था में लय कम करके क्रमशः द्रुतलय पर आना चाहिए। अभ्यास में शीध्रता न दिखाकर दानेदार अभ्यास ही लाभदायक है। लय संगीत का प्राण स्वरूप है। अतः आलाप व तान का अनन्तर लय में ही अभ्यास अपेक्षित है । भिन्न–भिन्न लयकारियों में अभ्यास से शिष्य प्रत्येक लय में अभ्यस्त हो जाता है तथा उसका ताल परिपक्व हो जाता है। यही ताल–परिपक्वता लय के निरंतर अभ्यास पर निर्भर है, जो संगीत के शिक्षार्थी के लिए परम आवश्यक है। परंतु, वर्तमान समय में राग–गायन में तान–बाजी के प्रति कलाकार अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं। पंडित भातखण्डेजी का इस संबन्ध में कहना है –

''इस समय इस तानबाजी के शैतान ने हमारे संगीत में प्रविष्ट होकर बहुत कुछ नाश कर दिया है। निरक्षर और जड़ बुद्धि के गायकों की दया पर निर्भर रहना हमारे सुशिक्षित वर्ग को अब पसंद नहीं। केवल तानों को कवायद देखकर अब हम आश्चर्यान्वित होना छोड़ चुके हैं।''

अंत में, भाव और रस के बिना संगीत की रसानुभूति सम्भव नहीं है। विद्वानों का कहना हैं कि अभ्यास करते समय तैयारी के साथ–साथ स्वर, लय, ताल, भाव ,रस आदि का ध्यान रखना भी अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रकार अभ्यास करने से संगीतज्ञ सफल कलाकार की कोटि में प्रतिष्ठित हो सकता है।

निष्कर्ष :

यद्यपि, संगीत की शिक्षा ग्रहण करने वाले अनेक छात्र होते हैं, परिश्रम तथा अभ्यास भी सभी संगीत छात्र करते है, परन्तु सभी छात्र सफल संगीतज्ञ नहीं बन पाते । इससे यह स्पष्टतः ही सिद्ध है कि केवल अभ्यास मात्र से ही संगीत शिक्षण में सफलता नहीं प्राप्त होती अपितु अभ्यास विधि की समुचित ज्ञान से सफलता मिलती है, अभ्यास विधि की सटीक ज्ञान से संगीत की शिक्षा सरल और सुगम हो जाती है। अतएव संगीत के अभ्यास विधि का ज्ञान आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है।

सहायक ग्रथं सूची–

1.संगीत निबन्ध माला –– पं. जगदीश नारायण पाठक – पाठक पब्लिकेशन, इलाहाबाद ।
2.भातखण्डे संगीतशास्त्र (प्रथम भाग)––पं. विष्णुनारायण भातखण्डे – संगीत कार्यालय, हाथरस, (उ.प्र.)।
3.आलाप–तान अंक –– संगीत कार्यालय हाथरस, (उ.प्र.)।
4.संगीत शास्त्र पराग –– गोविन्द राव राजुरकर – राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5.शब्द ब्रह्म – नाद ब्रह्म ––पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङमय – अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
6.सौंदर्य, रस एवं संगीत –– प्रो. स्वतंत्र शर्मा – अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

बीजु कुमार भागवती
M.Mus, Sangit Nipun, UGC NET, PhD (Music), Senior Music Teacher, Study Hall Educational Foundation, Gomti Nagar,Lucknow- 226010, Uttar Pradesh.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org